वीरभूमि हरयाणा - सीमा विवेचना

हरयाणा के हृदय सम्राट् हरयाणा केसरी युवक नेता प्रो. शेरसिंह एम. ए. अपने लेख "महा-दिल्ली (विशाल हरयाणा क्यों ?" में लिखते हैं "महाभारत काल में जब इन्द्रप्रस्थ की स्थापना हुई, तब से सन् 1858 तक दिल्ली के चारों ओर का क्षेत्र शासन की दृष्टि से एक रहा है । 1858 में अंग्रेज ने इसे कई टुकड़ों में बांट दिया, कुछ क्षेत्र तो उन रियासतों को इनाम के रूप में दे दिये जिन्होंने 1857 की स्वतन्त्रता की लड़ाई में देश के विरुद्ध अंग्रेज का साथ दिया, और यमुना के पश्चिम का बहुत सा भाग पंजाब के साथ जोड़ दिया । इस प्रदेश का नाम चाहे बदलता रहा हो, परन्तु इसका शासन एक रहा और दिल्ली उसकी राजधानी रही । सर्वखाप पंचायत का प्रायः 700 वर्ष का हस्तलिखित इतिहास जो शोरों ग्राम जिला मुजफ्फरनगर के एक परिवार ने परम्परा से सुरक्षित रखा है, इस क्षेत्र की सीमायें दिल्ली के चारों ओर 150 मील तक बतलाता है । इसी क्षेत्र में बसने वाली सभी बिरादरियों के सम्मिलित पंचायती राज्य का विवरण उस इतिहास में मिलता है । जिसे हम आज यू. पी. कहते हैं, उसका निर्माण तो 1877 में हुआ, जबकि उत्तर पश्चिमी प्रदेश (जिसे आज हम महादिल्ली वा विशाल हरयाणा कहते हैं) में से 1857 में कुछ भाग निकाल कर पंजाब में तथा कुछ रियासतों में मिला दिये गये, और 1877 में उस बचे हुये प्रदेश अवध को मिला दिया गया । 1901 में इसका नाम अंग्रेजों ने संयुक्त प्रान्त (आगरा व अवध) रखा । तभी से अंग्रेजी में इसे United Province (U.P.) कहने लगे । यह स्पष्ट है कि हमारी मांग पंजाब अथवा यू. पी. को तोड़ने की नहीं अपितु जिन क्षेत्रों को अंग्रेज ने शासन की सुविधा के लिये तथा देश-भक्तों को सजा देने तथा देश-द्रोहियों को इनाम देने के लिये तोड़ दिया था, आज स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् उस सजा को समाप्त करके उन क्षेत्रों को जो हजारों वर्षों से इकट्ठे रहे हैं, जोड़ने मात्र की है । " (पत्रिका 'महादिल्ली - विशाल हरयाणा क्यों?' 1 पृष्ठ, लेखक प्रो. शेरसिंह एम.ए., मन्त्री, विशाल हरयाणा परिषद्)

-इसी प्रकार पश्चिमी उत्तर प्रदेश की आगरा कमिश्नरी जिसमें मथुरा, अलीगढ़, आगरा, मैनपुरी और एटा जिले सम्मिलित हैं ।
-मेरठ कमिश्नरी के देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ और बुलन्दशहर जिले हैं ।
-रुहेलखण्ड, बरेली, बिजनौर, पीलीभीत, बदायूँ, मुरादाबाद, शाहजहांपुर और जिला रामपुर ।
-अम्बाला कमिश्नरी के अन्तर्गत गुड़गांव, रोहतक, करनाल, हिसार, अम्बाला और रोपड़ (तहसीलों को छोड़कर), महेन्द्रगढ़ जिला, और जीन्द, नरवाना तथा संगरूर जिले की तहसीलें सम्मिलित हैं ।
-राजस्थान के अलवर, भरतपुर, धौलपुर, झुन्झनूं और गंगानगर जिले सम्मिलित हैं ।
-दिल्ली राज्य तो इस प्रान्त का हृदय ही है । इस प्रकार उपर्युक्त यह सब प्रदेश हरयाणे के अन्तर्गत आते हैं । इसमें कुछ थोड़ा बहुत मतभेद हो सकता है ।
इस बात से हरयाणे की सीमाओं पर भली-भांति प्रकाश पड़ता है कि जो मांग महादिल्ली वा विशाल हरयाणा के पुनर्गठन की अनेक नेता भिन्न-भिन्न समयों में करते रहे हैं । स्वर्गीय लाला देशबन्धु जी गुप्त, जो आर्यसमाज तथा कांग्रेस के गण्य-मान्य व्यक्ति थे । 'दिल्ली नगर निगम' द्वारा लाला जी की अजमेरी गेट के चौराहे पर मूर्ति (स्टेचु) की स्थापना सिद्ध करती है कि वह भारत के उच्च नेताओं में से एक

व्यक्ति थे । माननीय नेता श्री देशबन्धु जी गुप्त ने 'प्रेस कान्फ्रेंस' में इस विषय में अपने विचार प्रकट किये थे जो 9 दिसम्बर 1932 के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में छपे थे । उनके विचार निम्न हैं –

"भारतवर्ष के पूरे इतिहास में शिमले का जिला छोड़कर जो कि अम्बाला डिवीजन का क्षेत्र है, वह कभी भी पंजाब का अंग नहीं था । यह हर प्रकार से पंजाब से भिन्न है । पंजाब के बेढ़ंगे विकास के कारण इसे प्रान्त का दुमछल्ला बना दिया । यह सम्बन्ध अनमेल सिद्ध हुआ । भाषा, संस्कृति, इतिहास, परम्परा तथा रहने-सहने के ढंग में तथा जातीय रूप से इस खंड और शेष पंजाब के बीच बड़ा अन्तर रहा है । अतः यह प्रदेश प्रान्त के शेष अंगों से घुल-मिल न सका और कई प्रकार से इसे हानि उठानी पड़ी । दूर पड़ा हुआ प्रदेश होने के कारण प्रान्त की आबादी के अधिक उन्नत भाग इस प्रदेश को अपना ही स्वार्थ निकालने और लाभ उठाने के लिए प्रयोग करते रहे । सैनिकों और कृषकों की जितना महत्वपूर्ण भाग इस खण्ड के विकास के लिए प्रान्तीय सरकार को देना चाहिए था वह न दिया गया । इस प्रकार इस खण्ड की उन्नति पिछड़ गई । और फिर हरयाणा जो लगभग अम्बाला डिवीजन का प्रदेश है, वहां के लोगों का अधिक खिंचाव यमुना के इस पार रहने वाले लोगों की ओर है । उनके साथ गणतन्त्रीय, आर्थिक तथा सामाजिक जीवन के बन्धनों के अतिरिक्त उनके औद्योगिक तथा कृषि व्यवसाय सम्बन्धी हित भी एक हैं । इन कारणों से, और यमुना पार अपने भाई बन्धुओं के साथ मिलाप करने के लिये, अम्बाला, आगरा, मेरठ, रुहेलखण्ड डिवीजनों तथा दिल्ली प्रान्त की पुनः बांट करने की मांग करते रहे हैं ।

"लगभग यही दशा उत्तर प्रदेश के आगरा, मेरठ और रुहेलखण्ड डिवीजनों की है । उनका दिल्ली के साथ सीधा सम्पर्क विच्छेद हुये बहुत थोड़ा सा ही समय बीता है । वरन् वह तो हिन्दुस्तान कहलाने वाले प्रान्त का ही, जिसकी राजधानी दिल्ली अथवा आगरा रही, अंग थे । प्रायः सभी बातों में इन डिवीजनों के लोग दिल्ली प्रान्त और अम्बाला डिवीजनों के लोगों से सम्बन्धित हैं ।

हिन्दुओं - जाटों, तगों, अहीरों, गूजरों, तालखारियों, पठानों, मुसलमानों, राजपूतों और रोहिलों की लगभग दो करोड़ की जनसंख्या जो कि एक शासन प्रबन्ध के आधीन थे और जिनकी भाषा और संस्कृति एक थी, परन्तु अब तीन सूबों में बिखर गये हैं । उनका पुनर्मिलन होने से उनकी एक सरकार होगी और उनका प्रदेश में सौराज्य होगा तथा वे दूसरे प्रदेशों की भिन्न-भिन्न बातों के प्रभाव से बचे रहेंगे, और इस प्रकार वे अपनी एक ही संस्कृति और एक सम्पन्न प्रदेश का पुनर्निर्माण कर सकेंगे ।"

लेखक: श्री आचार्य भगवान् देव (urf Shri Omanand Shashtri)